

अमृतलाल नागर की कहानियों में सामाजिक चेतना के स्वरूप का एक अध्ययन

अशोक कुमार स्वामी (शोध छात्र)

डा० धनेश कुमार मीना (शोध निर्देशक)

विषय हिन्दी कला विभाग, फैकल्टी ऑफ मानविकी मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ़

सारांश, अमृतलाल नागर की कहानियों में सामाजिक चेतना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है। इन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक समस्याओं, जैसे कि दहेज प्रथा, बाल विवाह, और स्त्री-पुरुष असमानता को बहुतायत में उजागर किया है। इनकी कहानियों में लखनऊ और अवध की संस्कृति, रीति-रिवाजों और सामाजिक जीवन का यथार्थ स्पष्ट चित्रण मिलता है। इसके अलावा अमृतलाल नागर जी ने एक कहानीकार के रूप में भी अपार ख्याति प्राप्त की। उन्होंने अपनी कहानियों में न तो पुरातन को नकारा है और न ही आधुनिकता से परहेज किया है, जैसे आपने "वाटिका, "पांचवां दस्ता, "एक दिल हजार दास्तां, "तुलाराम शास्त्री, "आदमी, नहीं! नहीं!" "एटम बम, "पीपल की परी, "सिकंदर हार गया, "भारतपुत्र नौरंगीलाल" जैसे कहानी संग्रह लिखे। अमृतलाल नागर, हिन्दी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कहानीकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक चेतना को सरल रूप में व्यक्त किया है। इनकी अपनी कहानियों में सामाजिक समस्याओं, जैसे कि दहेज प्रथा, बाल विवाह, और स्त्री-पुरुष असमानता को उजागर किया गया है। उन्होंने लखनऊ और अवध की संस्कृति, रीति-रिवाजों और सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण भी प्रस्तुत किया है। इसी संदर्भ में इनकी महत्वपूर्ण कहानी है 'चोर बना कोतवाल'। इस कहानी में दिव्यांग लोगों के साथ समाज का नकारात्मक रवैया प्रस्तुत किया गया है, साथ ही बच्चों को यह संदेश दिया गया है कि अपंगता शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक होती है।

मुख्य शब्द, 'सुनार', एटम बम, पीपल की परी, "सिकंदर हार गया, भारतपुत्र, नौरंगीलाल आदि।

परिचय, समाज में, दिव्यांग लोगों के प्रति मानवीय व्यवहार हो, यही इस कहानी का मुख्य ध्येय है। इसके अतिरिक्त इस कहानी के मुख्य पात्र 'सुनार' को केंद्र में रख, बालकों को चरित्र निर्माण की शिक्षा देना भी लेखक का उद्देश्य रहा है। इस कहानी में 'सुनार' मेहनती एवं कार्यकुशल होने पर भी परिस्थितिवश चोरी करता है एवं अपने अपराध को सबके सामने स्वीकारता है तो वहाँ यह कहानी बाल पाठकों को यह शिक्षा देती है कि अपनी गलतियों का प्रायश्चित्त उसे स्वीकार करने पर ही हो सकती है। इसी बात के मद्देनजर, अपनी सच्चाई एवं ईमानदारी दिखाते हुए 'सुनार' कहता है – "मैं सचमुच चोर नहीं हूँ, भूख के मारे लाचार होकर चोर बना हूँ। मैं अच्छा सुनार हूँ पर काना होने के कारण सब मुझे मनहूस समझते हैं, देखना भी नहीं चाहते, इसलिए चोरी करने लगा।" उद्धरण में हम देख सकते हैं

कि दिव्यांग होने के कारण सामाजिक अवहेलनाओं का दंश 'सुनार' को झेलना पड़ता है। यह हमारे समाज का नकारात्मक पक्ष है जिसे लेखक ने बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया है, और इसका एक आदर्श समाधान दिया है। समाधान वही है जो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने दिया था "वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।" नागर जी की कहानियों में, विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर उनकी गहरी समझ और दृष्टिकोण देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, इनकी कहानी अग्निगर्भा में दहेज प्रथा के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाई गई है। यह कहानी भारतीय समाज में दहेज के कारण महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को दर्शाती है। इसी तरह, उनके कई अन्य कार्यों में बाल विवाह, यौन शोषण, और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को उठाया गया है।

नागर जी की कहानियों में, लखनऊ और अवध के सामाजिक जीवन का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने लखनऊ के नवाबों के जीवन, वहाँ के रईसों के तौर-तरीकों, और आम लोगों के जीवन को अपनी कहानियों में विस्तार के साथ पिरोया है। इनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है, जो पाठकों को कहानी के साथ जोड़ती है। अमृतलाल नागर की कहानियों में सामाजिक चेतना, यथार्थवाद, और लखनऊ एवं अवध की संस्कृति का सुंदर मिश्रण है। उनके लेखन ने न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अमृतलाल नागर ने हिन्दी साहित्य पर अमिट छाप छोड़ी और उन्हें कथा साहित्य के एक प्रमुख शिल्पी के रूप में याद किया जाता है। अमृतलाल नागर को 20वीं सदी के एक प्रमुख प्रमुख हिन्दी लेखक के रूप में जाना जाता है। उनकी कहानी कहने की कला और चरित्र-निर्माण की कला अद्वितीय है। नागर ने भारतीय साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उन्हें अक्सर प्रेमचंद का सच्चा साहित्यिक उत्तराधिकारी कहा जाता है।

अमृतलाल नागर ने अपने करियर की शुरुआत एक पत्रकार और लेखक के रूप में की थी। हालाँकि, लेखन के प्रति उनके जुनून ने उन्हें भारतीय फिल्म उद्योग की ओर आकर्षित किया, जहाँ उन्होंने दिसंबर 1953 से मई 1956 तक आकाशवाणी में एक नाटक निर्माता के रूप में काम किया। इसी दौरान उन्हें एहसास हुआ कि नियमित नौकरी उनके साहित्यिक कार्यों में बाधा बन सकती है। इसलिए उन्होंने अपना हर पल स्वतंत्र लेखन में लगाने का फैसला किया।

अमृतलाल नागर का लेखन एक लेखक के रूप में उनकी बहुमुखी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रमाण है। नागर की लेखन शैली उस समय की पारंपरिक लेखन शैलियों से भिन्न थी। उन्होंने सहजता से मानक (मानक) हिन्दी और आम लोगों की गैर-मानक (गैर-मानक) हिन्दी का मिश्रण किया। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामबिलास शर्मा ने नागर के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा, निःसंदेह, अमृतलाल नागर एक महत्वपूर्ण कहानीकार के रूप में याद किए जाएंगे। शोधार्थी के लिए, वे हिन्दी साहित्य के एक बहुत बड़े शिल्पी हैं।

अमृतलाल नागर अपनी कहानियों में विविध प्रकार के पात्र रचने की असाधारण क्षमता के लिए जाने जाते थे। नागर को उनके असाधारण कार्य के लिए कई प्रख्यात आलोचकों से प्रशंसा मिली है, जिनमें से एक हैं प्रख्यात लेखक और

हिंदी आलोचक श्रीलाल शुक्ल। श्रीलाल शुक्ल ने बहुआयामी चरित्र गढ़ने की नागर की प्रतिभा की प्रशंसा की है। शुक्ल ने लिखा है— अपने व्यक्तित्व को पात्रों पर थोपने के बजाय, नागर जी स्वयं को चरित्र और प्रक्रिया में विलीन कर देते हैं, वे अनुभव के स्तर पर उन सभी जटिलताओं को आत्मसात कर लेते हैं जिन्हें सरलतम पात्र भी चिंताओं और उलझी हुई पहेलियों के रूप में पालते हैं। यह कार्य केवल एक प्रखर रचनात्मक लेखक ही कर सकता है। हिंदी साहित्य में अमृतलाल नागर के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने अपनी कहानियों में पात्रों की भावनाओं, अनुभवों और चुनौतियों को सूक्ष्मता से पिरोकर उन्हें जीवंतता प्रदान की। नागर की कहानियों में विविध पाठकों को प्रभावित किया है क्योंकि उनकी रचनाओं में भारतीय समाज का सार झलकता है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को संवेदनशीलता के साथ उठाया और मानव अस्तित्व की जटिलताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। नागर को अपने शानदार करियर के दौरान साहित्यिक उपलब्धियों के लिए अनेक पुरस्कार मिले। उनकी मनमोहक कहानी और विस्तृत चरित्र-विकास ने उन्हें पाठकों के दिलों में एक विशेष स्थान दिलाया है। आज भी उनकी रचनाएँ पाठकों को प्रेरित और बांधे रखती हैं। इसी कार्य को करते हुए आप 23 फरवरी 1990 को, अमृतलाल नागर का लखनऊ, उत्तर प्रदेश में निधन हो गया। वे अपने पीछे अपनी समृद्ध साहित्यिक विरासत छोड़ गए। भारतीय साहित्य में नागर के योगदान ने साहित्य जगत में एक अमिट छाप छोड़ी है और उन्हें हिंदी साहित्य में एक चिरस्थायी व्यक्तित्व बना दिया है।

शोध साहित्यिक अवलोकन

इस शोध पत्र को पूरा करने के मेरे द्वारा निम्न लेखकों के उपन्यासों को अब तक अध्ययन किया जा चुका है, जो इस प्रकार हैं।

गोडशे विष्णुभट्ट (2020) द्वारा लिखा 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का एकमात्र आँखों देखा विवरण और प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार अमृतलाल नागर का उतना ही सरल और सटीक अनुवाद। पुस्तक की घटनाएं चित्रपट की तरह एक सूत्र में बंधी हुई आगे बढ़ती हैं। हर दृश्य, हर घटना का वर्णन इतना मार्मिक, रोमांचक और जीवंत है कि पाठक उसमें आकंठ डूब जाता है।

नागर अमृतलाल (2021) हम फिदा-ए-लखनऊ और अवध सदा से अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए विख्यात रहा है। नजाकत और नफासत के लिए विशेष रूप से जानी जाने वाली लखनवी संस्कृति आज भी वहां के जन मानस में जिन्दा है। वहां के निवासियों का यह कहना सच ही है कि 'हम फिदा-ए-लखनऊ', लखनऊ हम पे फिदा'। जीवन भर लखनऊ में रहने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतलाल नागर की ये कहानियाँ मनोरंजन के साथ लखनऊ के जनजीवन के हर पहलू को उजागर करती हैं।

नागर अमृतलाल (2022) नाच्यौ बहुत गोपाल अमृतलाल नागर हिंदी साहित्य के दिग्गज मने जाते हैं जिन्होंने उपन्यास, व्यंग संस्मरण और बाल-साहित्य जैसी अलग-अलग विधियों में लिखा! इस पुस्तक में अपनी विशिष्ट शैली में सर्वथा नवीनतम धरातल पर मानवीय संवेदना के जीते जागते पात्र उपस्थित किये गए हैं।

नागर अमृतलाल (2023) सात घूँघट वाला मुखड़ा सात घूँघट वाला मुखड़ा अमृतलाल नागर द्वारा रचित एक स्त्री पर आधारित उपन्यास है। ये उपन्यास मूलतः बेगम समरु के जीवन चरित्र पर आधारित है जो एक कश्मीर सौदागर की खूबसूरत बेटी है और अपने रियासत की मल्लिका बनने के खवाब पिरोती है। इस उपन्यास के केंद्र में बेगम समरु हैं जिन्हें मुन्नी, दिलाराम और जुआना के नाम से भी संबोधित किया गया है। बेगम समरु के अतिरिक्त बशीर खाँ, लवसूल, जनरल वाल्टर रेनहार्ट (नवाब समरु), सिपहसलार टॉमस भी बहुत महत्वपूर्ण किरदार के रूप में उजाकर होते हैं। उपन्यास की कहानी इतनी सी है कि एक बेगम अपने पति जनरल वाल्टर रेनहार्ट के दिल पर काबू कर लेती है और हिंदुस्तान की मल्लिका बनने के खवाब पिरोने लगती है।

शोध के उद्देश्य

अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना नामक इस शोध पत्र को पूरा करने के लिये शोधार्थी द्वारा निम्न शोध उद्देश्य तैयार किये गये हैं।

1. अमृतलाल नागर के कथा साहित्य के सामाजिक महत्व को ज्ञात किया गया है।
2. अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में कहानियों के सामाजिक महत्व को ज्ञात किया जायेगा।

शोध प्रश्न

अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना नामक इस शोध पत्र को पूरा करने के लिये मेरे द्वारा निम्नलिखित शोध प्रश्न का सहारा लिया गया है।

प्रश्न 1 अमृतलाल नागर के कथा साहित्य से सामाजिक रहन सहन का अध्ययन करना।

प्रश्न 2 अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में कहानियों से मिलती शिक्षा का अध्ययन करना।

शोध विधि

इस शोध को पूरा करने के लिये शोधार्थी निम्न शोध विधियों का प्रयोग इस शोध में करूंगा मुझे पता है, कि भारतीय साहित्य में बन्द प्रकार के आँकड़े ही होते हैं जैसे अतीत की घटना को आज शोधार्थी ने न तो देखा है और ना वह उस समय घटना उसके सामने हुई है, घटना का जो उल्लेख तात्कालीन हिन्दी के साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों, कहानियों, नाटकों आदि में पूरी तरह से स्पष्ट किया है। उसी से आज सत्य को सावधानीपूर्ण खोजना भी है। इसीलिये

उपरोक्त विषय अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना पर किया गया है, जिसके लिये शोधार्थी के इस शोध में शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष, अमृतलाल नागर को सदैव एक अग्रणी और दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने अपनी सुंदर कहानी कहने की कला और गहन चरित्रों से भारतीय साहित्य की दिशा तय की गई है।

अमृतलाल नागर अरी कहाँ हो? इन्दर की बहुरिया ! कहते हुए आँगन पार कर पंडित देवधर की घरवाली सँकरे, अँधेरे, टूटे हुए जीने की ओर बढ़ी। इन्दर की बहू ऊपर कमरे में बैठी बच्चे का झबला सी रही थी। मशीन रोककर बोली आओ, बुआजी, मैं यहाँ हूँ। कहते हुए वह उठकर कमरे के दरवाजे तक आई।

घुटने पर हाथ टेककर सीढ़ियाँ चढ़ते हुए पंडिताइन इस कदर हाँफ रही थीं कि ऊपर आते ही जीने के बाहर की दीवाल से पीठ टेककर बैठ गई। इन्दर की बहू आगे बढ़कर पल्ले को दोनों हाथों की चुटकियों से पकड़ सात बार अपनी फुफिया सास के पैरों पड़ी। 'ठंडी सीरी बूढ़ सुहागन, दूधन नहाओ पूतन फलो ! आशीर्वाद देती हुई पंडिताइन रुकीं, दम लेकर अपने आशीर्वाद को नया बल देते हुए कहा हम तो, बहुरिया, रात-दिन यही मनाए हैं। पहलौठी का होता तो आज दिन ब्याव की फिकर पड़ती (दबी आह) राम करै मारकंडे की आर्बल लैके आवै जल्दी से राम करै, सातों सुख भोगो, बेटा।' इन्दर की बहू का मुख-मंडल करुणा और श्रद्धा से भर उठा, पलकें नीची हो गईं। फुफिया सास की बाँह पकड़कर उठाते हुए कहा कमरे में चलो बुआजी। कृचलो, रानी तनिक सँताय लिया, तो साँस में साँस समाई। अब हमसे चढ़ा उतरा नहीं जाए है बेटा, क्या करै? बुआजी उठकर बहुरिया के साथ अंदर आई मशीन पर नन्हा-सा झबला देखकर बुआजी ने अपनी भतीज-बहू को खुफिया पुलिस की दृष्टि से देखा, फिर पूछाई झगला "दूधवाली के बच्चे के लिए सोच रही रही हूँ। चार बिटियों के बाद अबके लड़का हुआ है उसे। बड़ा शुभ समै है बिचारी के लिए।" "बड़ी दया-ममता है बहू तुमरे मन में। ठाकुरजी महाराज तुमरी सारी मनोकामना पूरी करे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण—
- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण
- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण
- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण—2015,
- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण—2015
- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण—2015,
- नागर, आर. (2015) अमृत और विष, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण—2015,
- नागर, आर. (2014) अग्निगर्भा, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, संस्करण
- नागर, आर. (2015) बूंद और समुद्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण